ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-17 दिसम्बर-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

राजयोग पहुँचायेगा स्व के राज्य तक

सभी धर्मों के अनुयायियों ने माना राजयोग के राज़ को, इण्डिया गेट बना साक्षी

भारत की राजधानी दिल्ली में सुबह से भोर की किरण जब निकली उस नूतन वेला में हमारे अध्यात्म की प्रखर प्रज्ञा दादी जानकी और दादी हृदयमोहिनी के आगमन से दिल्ली का इण्डिया गेट उनकी आभा से प्रखर हो उठा। उनके कदम जैसे ही वहां पड़े, वहां बैठे धर्म के पुरोधों ने उनका सहृदय सम्मान किया। ऐसा लग रहा था जैसे दोनों दादियों की वाणी ने इण्डिया गेट के पूरे प्रांगण को प्राण दान दे दिये हों और जैसे वहाँ से पूरे विश्व में आध्यात्मिक शांति की क्रान्ति का आगाज़ हो रहा हो। उसी समय विश्व के 146 देशों के ब्रह्माकुमारी संस्था के अनुयायियों ने एक ही समय पर एक साथ सामूहिक राजयोग का अभ्यास किया। ऐसा मनोरम दृश्य था इण्डिया गेट पर, हम तो यही कहेंगे जिसने ये नहीं देखा उसने कुछ नहीं देखा। ये हमारे यज्ञ के इतिहास का ऐतिहासिक दिन था जिसमें लगभग 70 हज़ार भाई बहनों की विशाल सभा उस दृश्य की साक्षी बनी।

नई दिल्ली। मैं कौन-मैं आत्मा, मेरा कौन- मेरा परमात्मा को पहचान कर स्वयं का परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना ही राजयोग है जिससे न केवल हमारा मन, बुद्धि एवं चरित्र सुधरता है साथ ही आंतरिक बुराइयां, विकार और व्यसन भी समाप्त हो जाते हैं। उक्त उद्गार इण्डिया गेट के मैदान पर विश्व शान्ति हेतु सामूहिक राजयोग शिविर में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका **दादी जानकी** ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका **दादी हृदयमोहिनी** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि राजयोग कोई आसन प्रक्रिया नहीं है बल्कि चलते-फिरते, कर्म करते हुए भी किया जा सकता है। इसके अभ्यास से हम स्वयं के, समाज के और सारे विश्व के वर्तमान एवं भविष्य को शांतमय, सुखमय, प्रेममय और सद्भावपूर्ण बना सकते हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य वक्ता **ब्र.कु. बृजमोहन** ने सभी विभिन्न धर्म, समुदायों के आये हुए नेताओं का अल्पावधि बुलावे पर आने का शुक्रिया किया तथा कहा कि राजयोग हमारे आंतरिक और बाह्य प्रकृति में असंतुलन और बाधाओं को समाप्त करता है।

केन्द्रीय गृह मंत्री **राजनाथ सिंह** जो किन्हीं कारणों से कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो पाये ने अपने लिखित संदेश में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा विश्व शान्ति और सद्भाव के लिए भारत के प्राचीन राजयोग और नैतिक मूल्यों के प्रसार के लिए धन्यवाद दिया।

जैन विवेक मुनी – भारत की जो मूलभूल विद्या है, जिसके कारण भारत विश्वगुरू के रूप में जाना जाता है, वह योग और अध्यात्म है। योग में भी राजयोग का मार्ग है, वह राज मार्ग है योग का जिससे ही हम अपने जीवन में शांति को प्राप्त कर सकते हैं, अपने मन एवं इंद्रियों को जीत सकते हैं। बिना योग के ना ही जीवन में संचार हो सकता है, ना ही विश्व में शांति हो सकती है। ब्रह्माकुमारी संस्था शांति, सद्भाव, भाईचारे के लिए व उस परमपिता परमात्मा से जुड़ने के लिए जिस साधना के मार्ग पर चल रही है वो सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांधने का काम करता है। यह सिर्फ प्रशंसनीय नहीं है परंतु वंदनीय भी है और अनुकरणीय भी।

- शेष पेज 7 पर

राजयोग से आंतरिक व बाह्य प्रकृति का भी होगा परिवर्तन- दादी
राजयोग कोई आसन प्रक्रिया नहीं है बल्कि चलते-फिरते, कर्म करते हुए भी किया जा सकता है-दादी हृदयमोहिनी

इण्डिया गेट पर मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी तथा विभिन्न धर्मों के अग्रणियों ने किया सम्बोधित। देश विदेश से आये करीब 70 हज़ार राजयोगी भाई बहनें सामूहिक राजयोग मेडिटेशन करते हुए।